



न्यायालय

## सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-2023 / 242

दर्ज तिथि:-25.07.2023

1. मोतीराम पुत्र अजाराम  
जाति कलबी निवासी भेडाणा तहसील गुढामालानी।

.....वादीगण

बनाम

1. अजाराम पुत्र भेराराम
2. करनाराम पुत्र अजाराम
3. वागाराम पुत्र अजाराम
4. रमकू पुत्री अजाराम
5. भवरी पुत्री अजाराम
6. चतराराम पुत्र भेराराम
7. सावलाराम पुत्र भेराराम
8. थानाराम पुत्र बरजोगाराम
9. द्रोपो पतनी बरजोगाराम
10. प्रकाश पुत्र बरजोगाराम
11. भानाराम पुत्र बरजोगाराम
12. लिखमाराम पुत्र महीगा
13. केवदाराम पुत्र नाथाराम
14. चैनाराम पुत्र पदमाराम
15. मांगाराम पुत्र पदमाराम
16. शंकराराम पुत्र पदमाराम
17. जोधाराम पुत्र करमीराम
18. भोमाराम पुत्र करमीराम
19. राजूराम पुत्र करमीराम
20. दलाराम पुत्र हरजीराम
21. दानाराम पुत्र हरजीराम
22. प्रभू पुत्र परगाराम
23. प्रभूराम पुत्र मानाराम फौत  
23 / 1 विष्णु पुत्र प्रभू  
23 / 2 हितेश पुत्र प्रभू  
23 / 3 ममता पुत्री प्रभू  
जातियान कलबी प्रतिवादी संख्या 23 / 2 से 23 / 3 नाबालिग वलिये माता नेती पत्नी प्रभू



- 23 / 4 नेती पत्नी प्रभू  
24. प्रहलादराम पुत्र अनाराम  
25. लिक्षमणाराम पुत्र अनाराम  
26. पैलादराम पुत्र नाथाराम  
27. रामूदेवी पत्नी नाथाराम  
28. हिन्दु पुत्र रामजी

जाति कलबी निवासी भेडाणा तहसील गुड़ामालानी जिला बाड़मेर।

.....असल प्रतिवादीगण

29. शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा गुड़ामालानी  
30. शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा एडीबी गुड़ामालानी  
31. शाखा प्रबन्धक, द सैन्ट्रल कॉपरेटिव बैंक बाड़मेर शाखा गुड़ामालानी  
32. तहसीलदार एवं उपपंजीयक गुड़ामालानी

..... तकमिली प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता

वादी:-श्री रामजीवन विश्नोई

प्रतिवादी:- श्री डालूराम चौधरी

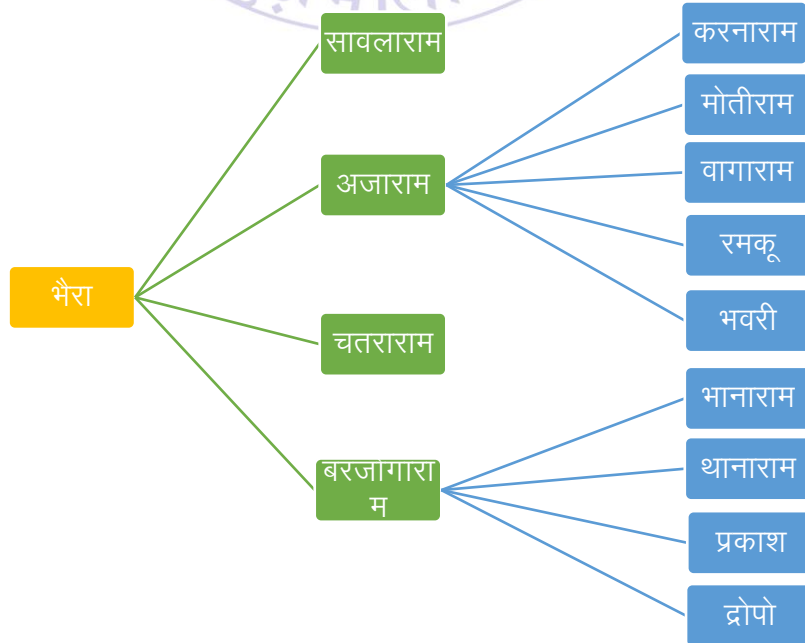
राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88, 188

राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

:-निर्णय:-

निर्णय तिथि:-22.12.2025

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत् इस्तकराहक्क अन्तर्गत धारा-88,188 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। वाद पत्र का सूक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 01 से 11 एक ही परिवार के हैं जिसे पूर्वपुरुष स्व0 भैराराम पुत्र रणछोड़ा के वारिश है। जिनका पारिवारिक सजरा निम्न प्रकार है:-



2. प्रकरण में वादी का अभिकथन है कि वादी एवं प्रतिवादी संख्या 01-11 की पैतृक खातेदारी आराजी खसरा संख्या 90, 1068 मौजा देवनगर, खसरा संख्या 131, 142, 211, 225, 375 मौजा नीलानाडी, खसरा संख्या 655, 694 मौजा भेडाणा तथा वादी एवं प्रतिवादी संख्या 01-28 की पैतृक खातेदारी आराजी खसरा संख्या 658, 666, 667, 668, 670 मौजा भेडाणा तहसील गुडामालानी में अवस्थित है। मुतनाजा आराजी का वक्त बंदोबस्त पर्चा लगान पक्षकारान के पूर्वज भैराराम पुत्र रणछोड़ा के नाम दर्ज हुआ। तत्पश्चात भैराराम पुत्र रणछोड़ा के फौत होने पर फौतगी नामांतरकरण संख्या 817 मौजा देवनगर, नामांतरकरण संख्या 6 मौजा नीलानाडी, नामांतरकरण संख्या 1119 मौजा भेडाणा द्वारा भैराराम पुत्र रणछोड़ा के चारो पुत्रों क्रमशः सांवलाराम, अजाराम, चतराराम, वरजोंगाराम पिसरान भैराराम के नाम दर्ज किया गया। इस प्रकार मुतनाजा आराजी पैतृक आराजी है। उक्त पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 है। प्रकरण में पक्षकारान हिन्दू विधि से शासित होते है। इस आधार पर वादीगण का मुतनाजा पैतृक एवं सहदायिकी संपत्ति में जन्म से ही अधिकार निहित होने के कारण हक व हिस्सा निहित है। परंतु प्रतिवादी संख्या 01 उक्त मुतनाजा आराजी को खुर्द-बुर्द करने पर आमदा है। इस कारण वादीगण को घोषणा का दावा प्रस्तुत करना पड़ा है। इस आधार पर मुतनाजा आराजी पर वादीगण को खातेदारी अधिकार प्रदान किये जावे।
3. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादी को जरिये नोटिस तलब किया गया। प्रकरण में प्रतिवादी संख्या 01-07 द्वारा उपस्थित होकर जवाब प्रस्तुत कर निवेदन किया कि वादीगण का दावा स्वीकार करते हुए पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 का बराबर-बराबर हिस्सा घोषित किया जावे।
4. तत्पश्चात् प्रकरण में निम्नलिखित तनकीयात कायम किये गये:-
1. आया वादीगण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत विधिक वारिश होने के आधार पर मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा प्राप्त करने के अधिकारी है।  
.....वादी
  2. आया प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत विधिक वारिश होने के आधार पर मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा प्राप्त करने के अधिकारी है।  
.....प्रतिवादी संख्या 01-04
  3. अन्य दादरसी  
.....उभय-पक्षकारान
5. मैंने विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में तनकीवार विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। प्रकरण में तनकी संख्या 01 व 02 का एक साथ विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। प्रकरण में तनकी संख्या 01 व 02 वादी की खातेदारी आराजी पर खातेदारी अधिकारों की घोषणा से संबंधित है।

6. प्रकरण में यह निर्विवादित है कि वादी एवं प्रतिवादीगण एक ही परिवार से संबन्धित हैं। वादीगण एवं प्रतिवादीगण का एक संयुक्त पूर्वज भैराराम पुत्र रणछोड़ा है। जीयाराम के एक ही पुत्र रामचन्द्र पुत्र जीयाराम है। उक्त पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 है।
7. प्रकरण में प्रथम अनुतोष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम—1955 की धारा—15 से संबंधित है। अतः सर्वप्रथम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम—1955 की धारा—15 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:—

**15. Khatedar tenants—** (1) *Subject to the provisions of section 16 and clause (d) of Sub-section (1) of section 180 every person who, at the commencement of this Act, is a tenant of land otherwise than as a sub-tenant or a tenant of Khudkasht or who is, after the commencement of this Act, admitted as a tenant otherwise than a sub-tenant or tenant of Khudkasht or an allottee of land under, and in accordance with, rules made under section 101 of the Rajasthan Land Revenue Act, 1956 (Rajasthan Act 15 of 1956) or who acquires Khatedari rights in accordance with provisions of this Act or of the Rajasthan Land Reforms and Resumption of Jagir Act, 1952 (Rajasthan Act VI of 1952) or of any other law for the time being in force shall be a Khatedar tenant and shall, subject to the provision of this Act be entitled to all the rights conferred; and be subject to all the liabilities imposed on Khatedar tenants by this Act.*

**Provided** that no Khatedari rights shall accrue under this section to any tenant, to whom land is or has been let out temporarily in Gang Canal, Bhakra, Chambal or Jawai project area or any other area notified in this behalf by the State Government.

(2) *Notwithstanding anything contained in sub-section (1) Khatedari rights shall not accrue there under to any person to whom land had been let out before the commencement of this Act by the State Government in furtherance of the Grow More Food Campaign or under some special order subject to some specified conditions or in pursuance of some statutory or non-statutory rules and who shall have, before such commencement, made a default in securing the objective of such campaign or a breach of any such order, condition or rule.*

(3) *Any person referred to in sub-section (2) may, within three years from the date of commencement of this Act and on payment of a court-fee of twenty five naye paise apply to the Assistant Collector having jurisdiction praying for a declaration that acquired Khatedari right under sub-section (1) in the land held by him.*

(4) *Such application may be made on any of the following grounds, namely:*

(a) *that the land held by him was let out to him after the commencement of this Act.*

*(b) that it was not let out to him in any of the circumstances specified in sub-section (2).*

*(c) that when the- land was so let out to him he was not apprised of such circumstances.*

*(d) that he had, before such commencement made no default or breach of the nature specified in sub-section (2).*

*(5) The Assistant Collector shall, upon the presentation of an application under sub-section (3), make inquiry in the prescribed manner and afford reasonable opportunity to the applicant of being heard and shall, if he does not reject the application, declare the applicant to have become Khatedar tenant of his holding in accordance with and subject to the provisions of the subsection (1).*

8. प्रकरण में वादी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार है:-

**6. Devolution of interest in coparcenary property.—**

*(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—*

*(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;*

*(b) have the same rights in the coparcenary property as she would have had if she had been a son;*

*(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenary property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:*

*Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.*

9. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अनुसार पुत्र व पुत्री को समान अधिकार व दायित्व प्राप्त होकर सहदायिकी का दर्जा प्राप्त करने के प्रावधान है। साथ ही अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में कोई सहदायक कभी भी अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवा सकता है। उक्त विधित प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में

प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादी द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त आराजी हिन्दू अविभाजित परिवार की अविभाजित पैतृक व सहदायिकी सम्पत्ति है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादीगण प्रतिवादी संख्या 01 की संतान हैं। इस आधार पर वादीगण प्रतिवादी संख्या 01 उक्त हिन्दू अविभाजित परिवार की अविभाजित पैतृक व सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक हैं। अतः वादी उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी है।

10. प्रकरण में पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 द्वारा मुतनाजा आराजी पर वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधानों के तहत मुताबिक कानूनी हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा का अनुतोष चाहा गया है। अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के तहत पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर पैतृक आराजी के खातेदार अजाराम पुत्र भैराराम के विधिक वारिसान वादीगण, प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।
11. इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादीगण के पिता प्रतिवादी संख्या 01 की पैतृक खातेदारी मुतनाजा आराजी है। प्रकरण में वादी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादी का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है। इस कारण मुतनाजा आराजी पर वादीगण की संयुक्त खातेदारी आराजी होने के कारण वादी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में संशय होने के कारण सुविधा व न्याय का संतुलन वादी के पक्ष में होना स्पष्ट नहीं है। अंत में प्रार्थी को अपूरणीय क्षति साबित करने से पूर्व संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाया जाना अपरिहार्य शर्त है। इस प्रकार अन्त में उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि

वादीगण द्वितीय अनुतोष प्रतिवादीगण के विरुद्ध संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाये बिना स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी नहीं है। अतः

आदेश है कि

वादीगण का दावा तथा प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 का प्रतिदावा दावा बाबत इस्तकरारहक्क स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी को मुतनाजा आराजी तहसील गुड़ामालानी में उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में अजाराम पुत्र भैराराम के हिस्से की आराजी पर वादी व प्रतिवादी संख्या 01-05, 33 प्रत्येक को 1/7-1/7 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। इसी अनुसार वादी व प्रतिवादी संख्या 01-05, 33 को उक्त आराजी में घोषित हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज दिनांक 22.12.2025 को यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)  
सहायक कलक्टर  
गुड़ामालानी-बाड़मेर



न्यायालय

## सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुडामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-2023 / 242

दर्ज तिथि:-25.07.2023

1. मोतीराम पुत्र अजाराम  
जाति कलबी निवासी भेडाणा तहसील गुडामालानी।

.....वादीगण

बनाम

1. अजाराम पुत्र भेराराम
2. करनाराम पुत्र अजाराम
3. वागाराम पुत्र अजाराम
4. रमकू पुत्री अजाराम
5. भवरी पुत्री अजाराम
6. चतराराम पुत्र भेराराम
7. सावलाराम पुत्र भेराराम
8. थानाराम पुत्र बरजोगाराम
9. द्रोपो पतनी बरजोगाराम
10. प्रकाश पुत्र बरजोगाराम
11. भानाराम पुत्र बरजोगाराम
12. लिखमाराम पुत्र महीगा
13. केवदाराम पुत्र नाथाराम
14. चैनाराम पुत्र पदमाराम
15. मांगाराम पुत्र पदमाराम
16. शंकराराम पुत्र पदमाराम
17. जोधाराम पुत्र करमीराम
18. भोमाराम पुत्र करमीराम
19. राजूराम पुत्र करमीराम
20. दलाराम पुत्र हरजीराम
21. दानाराम पुत्र हरजीराम
22. प्रभू पुत्र परगाराम
23. प्रभूराम पुत्र मानाराम फौत  
23 / 1 विष्णु पुत्र प्रभू  
23 / 2 हितेश पुत्र प्रभू  
23 / 3 ममता पुत्री प्रभू  
जातियान कलबी प्रतिवादी संख्या 23 / 2 से 23 / 3 नाबालिग वलिये माता नेती पत्नी प्रभू



- 23/4 नेती पत्नी प्रभू  
24. प्रहलादराम पुत्र अनाराम  
25. लिक्षमणाराम पुत्र अनाराम  
26. पैलादराम पुत्र नाथाराम  
27. रामूदेवी पत्नी नाथाराम  
28. हिन्दु पुत्र रामजी

जाति कलबी निवासी भेडाणा तहसील गुड़ामालानी जिला बाड़मेर।

.....असल प्रतिवादीगण

29. शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा गुड़ामालानी  
30. शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा एडीबी गुड़ामालानी  
31. शाखा प्रबन्धक, द सैन्ट्रल कॉर्पोरेटिव बैंक बाड़मेर शाखा गुड़ामालानी  
32. तहसीलदार एवं उपपंजीयक गुड़ामालानी

..... तकमिली प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता

वादी:-श्री रामजीवन विश्णोई

प्रतिवादी:- श्री डालूराम चौधरी

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88, 188

राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

—:पर्चा डिक्री:-

वादीगण का दावा तथा प्रतिवादी संख्या 02 लगायत 05 व प्रतिवादी संख्या 33 का प्रतिदावा दावा बाबत इस्तकरारहक्क स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी को मुतनाजा आराजी तहसील गुड़ामालानी में उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में अजाराम पुत्र भैराराम के हिस्से की आराजी पर वादी व प्रतिवादी संख्या 01-05, 33 प्रत्येक को 1/7-1/7 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। इसी अनुसार वादी व प्रतिवादी संख्या 01-05, 33 को उक्त आराजी में घोषित हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत् राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

यह पर्चा-डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार गुड़ामालानी को भिजवाई जावें। आदेश जारी हो। पक्षकारान अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा-डिक्री आज दिनांक 22.12.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)

सहायक कलक्टर

गुड़ामालानी-बाड़मेर